अध्याय - आठ

अध्याय - आठ

निष्कर्ष एवं उपलब्धियाँ

समकालीन का अभिप्राय एक ही काल-खण्ड में घटित होने वाला और चेतना का अभिप्राय है , उस काल खण्ड विशेष को देखने परखने , समझने और मूल्यांकित करने की यथार्थपरक दृष्टि । इस रूप में समकालीन चेतना एक काल खण्ड विशेष के मूल्यांकन की ऐसी चेतना है , जिसके आधार पर काल विशेष के पूरे परिवेश और प्रभाव को सामने लाया जा सकता है। समसामयिकता , आधुनिकता बोध और समकालीन चेतना एक दुसरे से प्रभाव के स्तर पर जुड़े हुए हैं , फिर भी ये एक नहीं हैं । इनका वैशिष्ट्य अलग-अलग है , जो इन्हें परस्पर अलग करता है , किंतु यह अलगाव किसी भी रूप में विरोध पैदा करने वाला नहीं है। इसे अध्ययन और विश्लेषण पद्धति की स्वतंत्र किंतु सहयोगी स्थितियों से निर्मित माना जाता है । समकालीन चेतना इनमें सबसे विशिष्ट है , क्योंकि यह कालगत चेतना से जुड़ी हुई होती है । यह कालगत चेतना भी एक विशेष काल खण्ड के अंतर्गत घटित होने वाली सामाजिक , सांस्कृतिक , आर्थिक व राजनैतिक स्थितियों के मेल से उत्पन्न होती है । समकालीन चेतना परिवेश व जीवन-स्थितियों का अध्ययन परंपरा से जुड़ कर करती है । उसका केंद्र बिंदु वैज्ञानिक यथार्थपरक और कार्य-कारण संबंध से जुड़ा हुआ होता है । यही कारण है कि समकालीन-चेतना आम जन-जीवन के साथ ही साहित्य से भी गहरे स्तर पर जुड़ी हुई होती है । पहले समकालीनता की विशिष्टताएँ और समकालीन चेतना से प्रभावित समाज-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ साहित्य की दिशा तय करती है , फिर समकालीन चेतना से युक्त साहित्य इतना समर्थ हो जाता है कि वह अपने काल खण्ड का मूल्यांकन भी करने लगता है और इसे प्रभावित भी करने लगता है ।

समकालीनता और समकालीन जीवन-बोध समकालीन चेतना के केन्द्र बिंदु हैं । समकालीन चेतना का संबंध एक ऐसे विचार एवं व्यवहार से है , जिसका जन्म समकालीन जीवन-दृष्टि से हुआ । इस जीवन-दृष्टि ने समाजार्थिक , समाज-सांस्कृतिक , समाज-राजनैतिक और वैयक्तिक - सभी संदर्भों को नयी दृष्टि से मूल्यांकित करने और उनकी यथार्थ स्थिति को पहचानने पर बल दिया । नई कविता के अनुभव और समीक्षा दृष्टि के स्थान पर जब समकालीन दृष्टि प्रतिष्ठित हुई , तो आधुनिकतावाद का रूप चटक गया । परिणाम स्वरूप काव्य-रचना के केन्द्र में आम आदमी , आम-जीवन और यथार्थ-अनुभव की दृष्टि ने नया स्थान बना लिया । समकालीन चेतना ने कविता मात्र को आम जनता से जोड़ने का विशिष्ट कार्य किया । अब कवियों का लक्ष्य काव्य-रचना के बहाने समकालीन काल- खण्ड और परिवेश का तटस्थ गहन और सही-सही मूल्यांकन हो गया । यही कारण है कि समकालीन चेतना से प्रेरित काव्य-साहित्य का अधिकांश समाजार्थिक और समाज-राजनैतिक समस्याओं से जुड़ा है । सांस्कृतिक मूल्य और व्यक्ति की चेतना में जो बदलाव आए हैं , वे भी समकालीन चेतना संपन्न कविता की विषय वस्तु के अंग हैं ।

न केवल हिंदी बल्कि सभी भारतीय भाषाओं की कविता को समकालीन चेतना ने प्रभावित किया है । मणिपुरी कविता भी उन्हीं में से एक है । आधुनिक मणिपुरी कविता मूल रूप से सन् 1949में एलाङ्बम नीलकांत द्वारा रचित मणिपुर शीर्षक कविता से प्रारम्भ मानी जाती है । यह शुरूआत भले ही हिंदी भाषा की आधुनिक कविता के बाद हुई , किंतु साठोत्तरी काल में इन दोनों भाषाओं की काव्य दृष्टि में उत्पन्न परिवर्तन समय का बड़ा अन्तराल नहीं रखता । मोह-भंग की जो प्रतिक्रिया हिंदी कविता के चरित्र को प्रभावित करनेवाली बनी , उसने मणिपुरी भाषा की काव्य-चेतना को भी प्रभावित किया ।

हिंदी में इस समकालीन-चेतना को ग्रहण करके काव्य-रचना करने वाले कवियों में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का स्थान महत्त्वपूर्ण है । उन्होंने कहा है :- लीक पर वे चलें जिनके / चरण दुर्बल और हारे हैं/हमें तो जो हमारी यात्रा से बने / ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं । कवि की यह घोषणा उनके स्वतंत्र कवि व्यक्तित्व से ही जुड़ी है और कवि द्वारा ग्रहीत समकालीन चेतना से

भी । काठ की घंटियाँ , कुँवानो नदी , जंगल का दर्द , खूँटियों पर टँगे लोग , गर्म हवायें आदि सर्वेश्वर के वे महत्त्वपूर्ण संकलन हैं , जिनमें समकालीन चेतना के दर्शन किये जा सकते हैं । इनकी कविताओं में सामाजिक , राजनैतिक और आर्थिक परिदृश्य को समकालीन जीवन-बोध और निरीक्षण दृष्टि के सहारे विश्लेषित किया जा सकता है ।

मणिपुरी भाषा में यही विशिष्टता श्रीबीरेन के काव्य की भी है । यद्यपि उन्होंने काव्य-रचना छात्र-जीवन में ही प्रारंभ की थी , किंतु उनका पहला काव्य-संग्रह (तोल्लबा शादुगी वाखल) सन् 1970 में प्रकाशित हूआ । यह संग्रह मणिपुरी काव्य साहित्य में अपना अलग स्थान रखनेवाले क्रुद्ध कविता आन्दोलन के प्रारंभिक महत्वपूर्ण संकलनों में से एक है । इनकी कविताओं में क्रुद्ध काव्यान्दोलन के सिद्धांत और मूल्य आसानी से खोजे जा सकते हैं । मणिपुरी कविता के क्रुद्ध कवि और हिंदी भाषा के समकालीन कवि चिंतन , दृष्टि , अभिव्यक्ति और काव्य-भाषा-गठन के स्तर पर बहुत भिन्न नहीं हैं । श्रीबीरेन सभी क्रुद्ध कवियों में सबसे गंभीर एवं समर्थ कवि माने जाते हैं । मणिपुरी समाज को भावनात्मक और भौतिक दोनों ही दृष्टियों से शोषण का शिकार बनानेवाली राजनैतिक , सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था पर उन्होंने धारदार व्यंग्य किया है । उनका काव्य साहित्य ही नहीं , बल्कि कथा और नाट्य साहित्य भी इन विशेषताओं से युक्त है ।

हिंदी कवि सर्वेश्वर और मणिपुरी कवि श्रीबीरेन का काव्य समान रूप से समकालीनता बोध , यथार्थ जीवन-दृष्टि और समकालीन चेतना से परिचालित है । जहाँ इन दोनों कवियों को समान धरातल पर प्रतिष्ठित करने वाला यह एक आधार है , वहीं जीवन , समाज और विश्व संदर्भों के प्रति विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति ने भी उन्हें समान भूमि प्रदान की है । इन दोनों कवियों में भिन्न भूमि भी विद्यमान है । सर्वेश्वर जहाँ आदि से अंत तक आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाये रहे , वहीं श्रीबीरेन का उत्तरार्धकालीन काव्य निराशा के साथ-साथ अध्यात्म और दार्शनिकता से युक्त हो गया । ऐसा किन परिस्थितियों में हुआ , यह शोध और अध्ययन का विषय है । फिर भी इतना तो कहा जा सकता है कि सर्वेश्वर ने अपने दृष्टिकोण से समकालीन जीवन को देखा और श्रीबीरेन ने अपने दृष्टिकोण से समकालीन-चेतना को ग्रहण किया । यह इन दोनों कवियों ने अपने- अपने वैशिष्टय के साथ किया ।

सर्वेश्वर का जन्म I5 सितम्बर I927 ई. को उत्तर प्रदेश प्रांत में बस्ती जनपद के महसों नामक गाँव में हुआ था । उनका देहान्त 23 सितम्बर I983 में हुआ । सर्वेश्वर का बाल्यकाल ग्रामीण परिवेश में बीता , खेतों की मेंड़ें , घर के आस-पास अनाथाश्रम के बच्चे और आर्थिक संघर्ष से उत्पन्न पारिवारिक कलह आपके बचपन के साथी रहे । अलग-अलग जगहों पर नौकरी करने के पश्चात उन्होंने ' दिनमान' में प्रमुख संपादक के रूप में वर्षों तक कार्य किया । फिर 'दिनमान' छोड़कर 'पराग' (बालपत्रिका) के सम्पादक बने । परिश्रम, कर्तव्यनिष्ठा और निरन्तर संघर्ष उनके जीवन के अंग रहे । कुल मिलाकर उनका पारिवारिक जीवन अंत तक संघर्षमय ही रहा ।

उन्होंने अपनी पहली कविता I941 में लिखी थी जो 'आर्यमित्र' में प्रकाशित हुई थी । I951 में उनकी कविताएँ 'प्रतीक' में प्रकाशित हुईं । एक कहानी लेखक के रूप में प्रथमतः साहित्य क्षेत्र में उनका पदार्पण हुआ था । उन्होंने उपन्यास, नाटक और यात्रा संस्मरण भी लिखे । कवि रूप में सर्वेश्वर को अज्ञेयजी ने तीसरे सप्तक में स्थान दिया और तब से उनकी चर्चा होने लगी । बाद में अपने स्वतंत्र काव्य-संकलनों के आने पर वे नई कविता के एक प्रतिनिधि कवि के रूप में स्थापित हुए । किशोरावस्था से प्रकृति सौन्दर्य , समसामयिक जीवन स्थिति तथा कोमल मनोभावों की सहज अभिव्यक्ति करते हुए सर्वेश्वर आगे चलकर समकालीन और जनवादी भाव-भूमि को ग्रहण करते हैं ।

सर्वेश्वर बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे । गद्य और पद्य दोनों पर उनका समान अधिकार रहा है । उनकी प्रकाशित रचनाएँ इस बात की साक्षी हैं । उनकी प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं :- **कविता संग्रह** - 1. तीसरा सप्तक 2. काठ की घण्टियाँ 3. बाँस का पुल 4. एक सूनी नाव 5. गर्म हवाएँ 6. कुआनो नदी 7. जंगल का दर्द 8. खूँटियों पर टँगे लोग (इस पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है) 9. क्या कहकर पुकारूँ, प्रेम कविताएँ 10. कविताएँ-१, 11. कविताए -२ , 12. कोई मेरे साथ चले ; **उपन्यास** -1. उड़े हुए रंग (सूने चौखटे), 2. पागल कुत्तों का मसीहा ,3. सोया हुआ जल ; **कहानी संग्रह** -1. कच्ची सड़क, 2. अन्धेरे पर अन्धेरा; **नाटक**-1. बकरी, 2. अब गरीबी हटाओ, 3. लड़ाई, 4. हवालात, 5. हिसाब-किताब;

नृत्यनाटिका - 1. होरी धूम मच्यो री , 2. रूपमती बाजबहादुर, 3. सावन घन आएँ , 4. रक्षा बंधन; **एकांकी** - 1. बुद्ध की करुणा , 2. सत्यवादी गोखले ; **बाल नाटक** - 1. लाख की नाक, 2. भों,भों,खों-खों , 3. हाथी की पों, 4 . अनाप-शनाप , 5 . कल भात आएगा; **यात्रा साहित्य** -1. कुछ रंग कुछ गन्ध ; **बाल साहित्य** - 1. बतूता का जूता , 2. महँगू की टाई ; **सम्पादन** -1. शमशेर (मलयज के साथ), 2. रूपाम्बरा (सहायक सम्पादक , स. अज्ञेय) 3. अन्धेरों का हिसाब, 4. नेपाली कविताएँ, 5. रक्तबीज; **सम्पादकीय टिप्पणियाँ**- 1. चरचे और चरखे।

जीवन की सच्चाइयों ने सर्वेश्वर के मन को आहत किया है । कृत्रिमता और झूठी सहानुभूतियाँ उन्हें प्रभावित नहीं कर सकी हैं। सत्य चाहे कितना ही कड़वा हो , सर्वेश्वर ने उसे व्यक्त करने में सन्तोष का अनुभव किया है , अतः विविध साहित्यिक विधाओं में रची गयी उनकी लगभग सभी रचनाओं में समकालीन व्यक्ति का यथार्थ अपने वास्तविक रूप में उभरा है । समसामयिक सच्चाइयों से जुड़ कर सर्वेश्वर की कविता विघटित मूल्यों के बीच एक सार्थक जिंदगी की खोज है। उसमें खुद को नये सिरे से तलाशने की एक कोशिश है, जिसे निजी पहचान का आग्रह कहा गया है । जीवन और साहित्य के माध्यम से प्रकाश में आया सर्वेश्वर का समकालीन दृष्टिकोण परंपरागत दृष्टि की तुलना में नितान्त भिन्न एवं मौलिक है । उनकी मान्यता है कि सभी अकथित सत्य विषैले हो जाते हैं , इसलिए सत्य को व्यक्त करना कवि का अभीष्ट है । यह सत्य वस्तुतः समकालीन युग का यथार्थ ही है । समकालीन जीवन की विसंगतियाँ , राजनैतिक प्रवंचनाएँ तथा सामाजिक विद्रूपदाएँ आदि सभी अवांछित स्थितियाँ युग के बड़े यथार्थ हैं। सर्वेश्वर का कहना है , कि आज समय की माँग यह है कि जो सत्य है उसे चुपचाप अपनाये रहने-भर से काम नहीं चलेगा , बल्कि जो असत्य है ,उसका विरोध करना पड़ेगा और मुँह खोलकर कहना पड़ेगा कि वह गलत है। यही कारण है कि सर्वेश्वर के साहित्य में सामाजिक बुराइयों का घोर विरोध हुआ है तथा युग के कटु एवं कठोर यथार्थ को निःसंकोच अभिव्यक्ति मिली है।

मणिपुरी साहित्य में युवा साहित्यकारों के पुरोधा कवि के रूप में प्रसिद्ध श्रीबीरेन का जन्म द्वितीय विश्व युद्ध के बड़े अशान्त वातावरण में 27 जून, सन् 1942 को हुआ। इनका निवास स्थान उरिपोक अचोम लैकाइ, इम्फाल है। इनका पूरा नाम श्री नोङ्थोम्बम बीरेन सिंह है, लेकिन साहित्य के क्षेत्र में उन्हें श्रीबीरेन के नाम से जाना जाता है। छोटी सी उम्र में ही उन्हें आर्थिक कष्ट के साथ-साथ पारिवारिक कलह झेलना पड़ा था। उनका मन जीवन के इन कटु अनुभवों से भरा हुआ है, फिर भी उनके हृदय में कोमल भावना की कमी नहीं है। वे अपने हृदय के कोने में छिपी इस कोमल भावना को स्कूल में पढ़ाये गये ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के एक पाठ का प्रभाव मानते हैं।

अत्यंत कच्ची उम्र में से ही उन्होंने साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ कर साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेना शुरू किया था। जब वे सातवीं कक्षा में थे, तब स्कूल में आयोजित पन्द्रह अगस्त के उत्सव में उन्होंने एलाङ्बम नीलकान्त की कविता 'मणिपुर' का वाचन किया था, जो आपके स्मृतिस्थल में सदा ताजी रहने वाली उपलब्धि है। उसी समय से कवि के मन में प्रयोगशील नयी कविता का अध्ययन करने की प्रेरणा उत्पन्न हुई। तब से ही कविता के प्रति उनका रुझान भी अत्यधिक प्रबल है। उन्हें काव्य-रचना के क्षेत्र में अपने मुहल्ले में रहने वाले काङ्जम पद्मकुमार जैसे कवियों से भी प्रोतसाहन मिला। उनके सम्पर्क में आने के कारण श्रीबीरेन को कई साहित्यिक संस्थाओं और साहित्यकारों से परिचित होने का मौका मिला। श्रीबीरेन अपने स्कूल और कॉलेज की पुस्तकें पढ़ने से कहीं अधिक ध्यान कविता और आलोचनात्मक पुस्तकें पढ़ने में देते थे। कॉलेज के जीवन में कवि अशाङ्बम मीनकेतन, राजकुमार सुरेन्द्रजीत सिंह, चोङ्थाम मनिहार सिंह, नीलकांत जैसे साहित्य प्रेमियों को अपने अध्यापक के रूप में पाया। इनसे कवि को साहिय साधना की बहुत बड़ी प्रेरणा मिली।

दुःख की बात यह है कि श्रीबीरेन एक भयंकर बीमारी के शिकार हैं और अब इस बीमारी के कारण उनके हाथ पैर सामान्य रूप से काम करने में असमर्थ हो गए हैं। बीमारी के कारण कवि का स्वास्थ्य बिगडता जा रहा है, फिर भी साहित्य-सेवा में अर्पित कवि की लेखनी अब तक थकी

नहीं है , भले ही इसकी गति में थोड़ी सी शिथिलता आ गयी हो । अब तक प्रकाशित आपकी मौलिक रचनाएँ इस प्रकार हैं :- 1. लैचिल्लकी थाज (कहानी संग्रह) 2. तोल्लबा शादुगी वाखल (कविता संग्रह) 3. हल्लकपा (नाटक)4. मसिना इम्फालगी वारीनि (कविता संग्रह) 5. मपाल नाइदबसिदा ऐ (, कविता संग्रह)6. मी शुम्नबा कोल्लू (, कहानी संग्रह) 7. कैराक (1997 में साहित्य अकादमी , नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित मणिपुरी एकांकी - संग्रह में संकलित) 8. सनागी कैराक (, कविता संग्रह) 9 . मणिपुरी साहित्यदा वाखल्लोन खरा (आलोचना) । इसके अतिरिक्त उन्होंने मणिपुरी साहित्य परिषद द्धारा प्रकाशित कविता संग्रह "परिषद की मणिपुरी कविताएँ " (1972) का संपादन कवि एलाङ्बम नीलकांत के साथ किया । इसके साथ-साथ नहारोल साहित्य प्रेमी समिति , इम्फाल के नवें प्रकाशन "अतोप्पा खोंजेल (कविता-संग्रह) ", मई , 1975 के सम्पादक मण्डल में आप भी थे । आप नहारोल साहित्य प्रेमी समिति , इम्फाल की त्रैमासिक पत्रिका 'वाखल' (1975) के सम्पादक भी बने । उनकी कुछ उल्लेखनीय अनूदित कविताएँ (अंग्रेजी से मणिपुरी भाषा में) हैं - (1) T.S. Eliot की " The love song of J. Alfred Prufrock (जे. अल्फ्रेद प्रुफ्रोक की नुङ्शी इशै)" (1917) , (2) Ezra Pound की "ओर्तस "और (3) Pablo Neruda की " The Satrapse (लैङाक मपूशिङ)" । इसके अतिरिक्त उन्होंने Samual Beckett के " Waiting for Godot " (1952) नाटक का मणिपुरी भाषा में अनुवाद किया, जिसे मई 29, 1977 को "जे. एन. मणिपुरी डॉन्स अकादमी" के मंच पर प्रदर्शित किया गया था । यद्यपि वे पाश्चात्य साहित्य से अधिक प्रभावित हैं , लेकिन जीवन के उत्तरार्ध में उनके साहित्यिक प्रेम की दिशा भारतीय साहित्य की ओर होने लगी है । माइकल मधुसूदन दत्त और मोहन राकेश जैसे महान साहित्यकारों के साहित्य की सुन्दरता से तो पहले से परीचित है ही, अब वे कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर की 'गीतांजली' के कसाव में हैं । यदि स्वास्थ्य रुकावट नहीं डालता, तो वे हर सुबह 'गीतांजली' पढ़ कर दिन की शुरूआत करते हैं । श्रीबीरेन कवि, कहानीकार व नाटककार के रूप में जितने प्रसिद्ध हैं , उतने ही एक अच्छे समालोचक के रूप में भी। कवि का जीवन साहित्य के प्रति पूरी तरह समर्पित है । जब भी साहित्य की चर्चा होती है , तो

आपको खाने-पीने तक की सुध नहीं रहती । श्रीबीरेन के प्रारम्भिक रचना संस्कारों पर पाश्चात्य साहित्य का अधिक प्रभाव पड़ने के कारण उनकी प्रारम्भिक रचनाओं में अश्लील शब्दों , बिम्बों व प्रतीकों का मुक्त प्रयोग दिखाई देता है। उनकी साहित्यिक यात्रा को देखने से ऐसा लगता है कि प्रारम्भ में उनकी काव्य धारा आक्रोश व आक्रान्ति की ओर थी, लेकिन अब शान्ति और संयम की ओर गतिशील है।

भाग्य द्वारा कवि के स्वास्थ्य के साथ घिनौना खेल खेलते हुए भी साहित्य सेवा में कवि को कभी भी थकान का आभास नहीं होता। यह अथक उत्साह ही है , जिसने कवि को मणिपुरी साहित्य-सेवा में जीवनार्पित सभी साहित्य सेवकों व साहित्य प्रेमियों के प्रति अर्पित सम्मान के रूप में 'कवि कीर्तन' करने की प्रेरणा दी।

श्रीबीरेन का मानना है कि पूर्व प्रचलित साहित्यक दृष्टिकोण , विचार , शैली आदि को तोड़ कर नये जीवन-मूल्यों से युक्त पूर्णतः नयी कृतियों का निर्माण करना चाहिए। साहित्य और जीवन को अलग नहीं करना चाहिए । साहित्य के सारे तत्व , शब्द व मुहावरे जीवन से लेने चाहिए। उनका मानना है कि जब जीवन जटिलता , तनाव , बेबसी , ऊब , संघर्षशीलता एवं अनीति आदि से घिरा हुआ हो तो साहित्य में आलंकारिक व कोमल भाषा को कैसे स्थान दिया जा सकता है ? कमिटेड रचना ही अच्छी रचना माननी चाहिए । कवि के इस चिंतन पर टी. एस. इलियट जैसे पश्चिमी साहित्यकारों का प्रभाव स्पष्टतः झलकता है । अपने इस काव्यगत दृष्टिकोण के कारण श्रीबीरेन की प्रारम्भिक कविताओं में क्रोध, आक्रोश, तोड़-फोड़, जीवन के नए अर्थ व मूल्यों की खोज, खोये आदर्श आदि के स्वर बड़े ही उत्क्रांत रूप में सुनाई देते हैं । वास्तव में यही रूप समकालीन व्यक्ति की मानसिकता का रूप है । इस तरह की अव्यवस्थित व तनाव भरी परिस्थितियों के कारण स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में अधिक खुलापन तथा स्वच्छन्दता भी दिखाई देने लगी है । उधर पवित्र एवं जन्म-जन्मान्तर तक विस्तृत पति-पत्नी के रिश्ते में भी परिवर्तन आ गया है । श्रीबीरेन ने समकालीन व्यक्ति की इस समस्या को भी अपनी रचनाओं में उभारा है।

समकालीन चेतना के परिप्रेक्ष्य में सर्वेश्वर ने समग्र भारतीय समाज को ध्यान में रखा है, जबकि श्रीबीरेन की रचनाओं के केंद्र में मुख्यतः मणिपुरी समाज है । इसके बावजूद सामाजिक मूल्य-बोध संबंधी दृष्टिकोण इन दोनों कवियों का वैशिष्ट्य प्रदर्शित करता है । दोनों ही कवि समाज को समकालीन चेतना के प्रकाश में देखते हैं । इसमें कटु यथार्थ और सौंदर्य बोध , दोनों की महत्वपूर्ण भागीदारी है ।

दोनों कवियों ने धर्म और संस्कृति का सम्बन्ध मानवता के साथ जोड़ कर देखा है और जहाँ कहीं भी धर्म व संस्कृति के नाम पर अन्याय , अत्याचार व अनुचित कार्य होता है, दोनों कवियों ने उसका खुल कर विरोध किया है। तथाकथित धार्मिक पण्डितों , पाखण्डों द्वारा धर्म का गलत इस्तेमाल करने वालों और इनकी करतूतों के सामने आम जनता की बली की बकरी बनने की स्थिति को बड़े ही यथार्थ रूप में दोनों कवियों ने अपनी -अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया है। स्वार्थ पर केन्द्रित धर्म के प्रति घृणा प्रकट करते हुए उन्होंने ईश्वर को मानव का शत्रु तक कहा है। साम्प्रदायिक भावना से प्रेरित धर्म व जाति-भेद को मिटाकर एक सर्व सम्मत धर्म - मानवतावाद- को पुनर्जीवित करना चाहा है। श्रीबीरेन मानव की महत्ता को इतना अधिक मानते हैं कि उनके अनुसार मानव के बिना ईश्वर भी असहाय है।

संस्कृति और परम्परा सम्बन्धी दृष्टिकोण में भी दोनों कवि एकमत हैं। परिवर्तित समय की धारा के साथ-साथ सामाजिक विश्वासों और मान्यताओं में भी समयानुरूप परिवर्तन आता रहता है। यह परिवर्तन प्रगतिशीलता का प्रतीक है , लेकिन समीक्ष्य कवि परिवर्तन के नाम पर थोपी गयी नई संस्कृति और आधुनिकता को प्रगतिशीलता नहीं मानते। उन्होंने परायी संस्कृति को अपनाकर आधुनिकता की डींग मारने वालों पर व्यंग्य बाण चलाए हैं । आधुनिकता की धुन में पतन की राह पर अग्रसर स्त्रियों का चित्र भी उन्होंने खुब अच्छी तरह से चित्रित किया है। पुरुष की प्राचीन विलासी प्रवृत्ति की शिकार बनी स्त्रियों का चित्र प्रस्तुत कर उन्होंने गौरवान्वित भारतीय संस्कृति पर प्रश्न चिह्न लगाया है। एक स्वस्थ भविष्य के लिए संघर्षरत वर्तमान का चित्र प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया है कि अपनी संस्कृति से दूर हटकर भौतिकवादी मानसिकता में लिप्त हो जाने से

जीवन की सुख शान्ति कम हो गयी है और मानव अपने ही द्वारा निर्मित समस्याओं में उलझकर छटपटा रहा है। आम जनता अपने अस्तित्व का प्रश्न ढोते हुए भटक रही है। सर्वेश्वर मानते हैं कि मानवता की नींव क्षणिक भौतिक संसार की चकाचौंध की कच्ची भूमि पर नहीं खड़ी है । दोनों ही कवियों ने पारम्परिक रूढ़िबद्ध संस्कृति की जगह मानवतावाद पर आधारित एक स्वस्थ मानव संस्कृति का स्वप्न देखा है।

पूँजीवाद ने मुख्य आक्रमण मध्य भारतीय अर्थ व्यवस्था पर किया । पूँजीवाद का आक्रमण उस क्षेत्र पर 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में हो गया था । साठोत्तरी काल में उसके भीषण परिणाम खुलकर सामने आने लगे । मणिपुरी अर्थ व्यवस्था को पूँजीवादी प्रभावों ने सन् 1950 के बाद ही स्पर्श करना शुरू किया , किन्तु जब एक बार पूँजीवाद ने रास्ता देख लिया तो उसने तीव्र गति से पूरी अर्थ व्यवस्था को अपने कब्जे में ले लिया । यद्यपि मणिपुरी समाज का आर्थिक ढाँचा बड़े उद्योगों पर आधारित न होकर कृषि व कुटीर उद्योगों पर आधारित है , किंतु यहाँ की बाजार व्यवस्था पूरी तरह पूँजीवादी शिकंजे में है । समीक्ष्य दोनों ही कवि पूँजीवाद और आम आदमी की आर्थिक समस्याओं से जुड़े हुए हैं । दोनों कवियों ने आर्थिक शोषण के कोल्हू में पिसते आम आदमी के हर दुख-दर्द के चित्र को बड़े ही स्पष्ट व यथार्थ रूप में चित्रित कर इन शोषितों के खोये हुए आत्मबल को वापस दिलाने की कोशिश की है । उन्होंने यह अच्छी तरह से दर्शाया है कि आज मानव बाह्य रूप से प्रगतिशील जरूर है , लेकिन आर्थिक प्रभुता के दर्प व आर्थिक शोषण रूपी दिमक ने इसे अन्दर ही अन्दर बिल्कुल खोखला कर दिया है , फलतः जीवन का मूल्य अर्थ-शक्ति के आधार पर आँका जाने लगा है और मानवीय रिश्ते अपना अर्थ खोते चले जा रहे हैं । इन परिस्थितियों से आहत स्वर दोनों कवियों की कविताओं में बड़ी ही मार्मिकता के साथ हमने पाया है ।

समकालीन राजनैतिक प्रभावों की दृष्टि से मध्य भारत और मणिपुर एक ही समय एक ही जैसे प्रभावों से ग्रस्त हुए । दोनों क्षेत्रों ने ही अवसरवादी , कुर्सीधर्मी , चुनावधर्मी , भ्रष्टाचार पर आधारित और दल-बदल को सफलता का आधार मानने वाली प्रवृत्ति का साक्षात्कार समान रूप

से किया । 'आया राम , गया राम' की राजनीति हरियाणा के बाद मणिपुर में ही सबसे अधिक फली-फुली । समकालीन चेतना और उससे प्रेरित कविताओं को प्रभावित करने में राजनैतिक परिदृश्य की बड़ी भूमिका है । सर्वेश्वर और श्रीबीरेन के काव्य में समकालीन राजनैतिक सच्चाई नग्न रूप में उपस्थित हुई है ।

सर्वेश्वर और श्रीबीरेन की कविताओं के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि दोनों कवियों ने समान रूप से समकालीन राजनीतिक भ्रष्टाचारों को झेला है , अतः उनकी कविताओं में राजनीतिक भ्रष्टाचार , शोषण , अन्याय , पाखण्ड व आडम्बर आदि का कटु व्यंग्योक्तियों के साथ जबरदस्त विरोध किया गया है । बेकारी, भूख , निरन्तर बढ़ती जनसंख्या, पीड़ा, घुटन , संत्रास , विषाद , कुंठा आदि विसंगतियों एवं मनोविकारों के कारण उत्पन्न निरीह स्थितियों , शासकीय मनमानी, स्वार्थपरता, अवसरवादिता , शोषणवृत्ति , झूठे आश्वासन , हत्या , लूट , आगजनी , विवशता , परवशता आदि की अभिव्यक्ति उनकी कविताओं में पूर्ण रूप से हुई है । उनके काव्य में समसामयिक परिवेश और उसमें जिन्दा व्यक्ति से गहरा साक्षात्कार मिलता है । इन सब से निजात पाने के लिए दोनों कवियों ने एक युग-क्रांति की आवश्यक्ता को महसूस किया है ।

समकालीन चेतना से जुड़े सर्वेश्वर और श्रीबीरेन ने बौद्धिक वर्ग की मानसिकता को भी प्रस्तुत किया है । वस्तुतः जनता का पक्ष लेने की घोषणा करनेवाला भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग अपनी जिम्मेदारी निभाने में पूरी तरह असफल रहा है । सर्वेश्वर और श्रीबीरेन ने अपनी अपनी कविताओं के माध्यम से समकालीन बौद्धिक जगत में हो रहे भ्रष्टाचारों का पर्दाफाश किया है । इन दायित्वहीन , स्वार्थी व अवसरवादी बुद्धिजीवियों के मार्ग-दर्शन के कारण पथ-भ्रष्ट हुए समाज को अधिक पतनोन्मुख होने से बचने की चेतावनी दोनों कवियों ने दी है । इस प्रकार दोनों कवियों ने जहाँ कहीं भी गलत होते हुए देखा , उस पर समान रूप से तीखे व्यंग्य बाणों की बौछार की है , फिर चाहे वह सत्ताधारियों का बौद्धिक जगत ही क्यों न हो ।

समकालीन चेतना के केन्द्र में व्यक्ति विशेष न हो कर आम आदमी है । यही कारण है कि समकालीन कविता में अभिजात व्यक्ति मूल्यों के लिए या फिर परंपरागत व्यक्ति चेतना के लिए अधिक आकर्षण नहीं है । समकालीन कविता दबे-कुचले आम आदमियों की मनोदशाओं को महत्व देती हैं , किन्तु यह भी सत्य है कि वैयक्तिक भावनाओं और मनोदशाओं की इस कविता ने पूरी तरह अनदेखी नहीं की है । जहाँ तक समकालीन चेतना के संदर्भ में सर्वेश्वर और श्रीबीरेन की मनोदशा का प्रश्न है , वहाँ समानताओं के साथ मौलिक भिन्नता भी है । जहाँ सर्वेश्वर , कम से कम काव्य में , अपनी मूल प्रखर चेतना से नहीं हटते , वहीं श्रीबीरेन के विचार और चिंतन में परिवर्तन दिखाई देता है । कभी भयानक रूप से क्रुद्ध मनोदशा से परिचालित श्रीबीरेन जीवन के उत्तरार्द्ध में मृत्यु पश्चात् के जीवन की कल्पना में खोते हुए प्रतीत होते हैं । वे बार-बार अपने युग के यथार्थ की चर्चा करते हुए भी मृत्यु पर वक्तव्य देने लगते हैं , व्यक्ति और मृत्यु का संबंध समझाने लगते हैं , मृत्यु से जीवन की अनिश्चितताएँ जोड़ने लगते हैं और किसी गम्भीर दार्शनिक की भाँति जीवन, मृत्यु और मनुष्य के अरूप संबंधों की व्याख्या करने लगते हैं । इस परिवर्तन के मूल में कौन से ठोस कारण हैं , इस विषय में कुछ भी कहना आसान नहीं है । श्रीबीरेन का व्यक्तित्व, जीवन , अपने समय से उत्पन्न निराशा या फिर अन्य कोई कारण इसके लिए जिम्मेदार है , यह अभी भी शोध का विषय है । स्वयं श्रीबीरेन इस विषय में अभी किसी निश्चित मत तक नहीं पहुँचे हैं । बार-बार पूछने पर भी उनका उत्तर होता है - 'मौन' ....केवल 'मौन' ....। साक्षात्कार लेने वाले या श्रीबीरेन को जानने वाला इस मौन की व्याख्या अपने ढंग से कर सकता है । यहाँ यह कहना आवश्यक है कि श्रीबीरेन की मानसिकता में यह जो परिवर्तन दिखाई देता है , उससे यह अर्थ कदापि नहीं लगाना चाहिए कि वे प्रचलित समकालीन चेतना से दूर हो गये हैं या कविता के संबंध में उनका उत्तरदायित्व बदल गया है । इसका कारण यह है कि सामाजिक यथार्थ की उनकी कविताएँ आज भी बहुत धरादार और प्रभावशाली होती हैं । इस स्थिति में यही कहा जा सकता है कि श्रीबीरेन के भीतर अपने युग-यथार्थ के साथ-साथ अध्यात्म और मृत्यु के संबंध में भी एक अनुभूति ने जन्म ले लिया है । इस अनुभूति को श्रीबीरेन किसी भी तरह यथार्थ जीवन से हीन नहीं मानते ।